रिकॉर्ड :– मुखड़ा देख ले प्राणी... "ओऽम" पिताश्री 5/10/1965
ऊँ शान्ति। यह किसने कहा– हे प्राणी अथवा आत्मा? कहते हैं न, इसके प्राण निकल गए। तो आत्मा निकल जाती है न। तो प्राण आत्मा को कहें, न कि शरीर को। बाप आत्मा से पूछते हैं पापात्मा हो या पुण्य आत्मा हो? सभी अपन को पतित मानते तो हैं। तो बाप कहते हैं अपनी आत्मा से पूछो, हमने कौन–2 से पाप किए हैं, कब से किए हैं। पापात्मा हैं तो सभी; परंतु नम्बरवार तो होते ही हैं न। तो नम्बरवन पुण्यात्मा कौन है? नम्बरवन पापात्मा कौन है? यह है पापात्मा, पतित उल्लुओं की दुनिया। यह भारत के लिए ही कहा जाता है; क्योंकि यही भारत पावन था। अब पतित है। उलटा लटका है। उल्लू उल्टे लटकते हैं। तो आज मनुष्य भी उल्टे लटके हुए हैं; क्योंकि माया के गुलाम बनते हैं। हम आधा कल्प माया को गुलाम बनाते हैं। जब माया को गुलाम बनाते हैं तब पुण्यात्मा कहा जाता है। ल०ना० को भगवान–भगवती कहते हैं तो अब वो कहाँ गए? सतयुग में केवल लक्ष्मी–नारायण तो नहीं थे; परन्तु उनकी पूरी डिनायस्टी थी। उस समय को पावन भारत कहा जाता था। दैवीगुण वाले थे। कहते हैं न सर्वगुण सम्पन्न... तो कहते हैं सम्पूर्ण निर्विकारी तो पुण्यात्मा ठहरे न, फिर कहते अहिंसा परमोधर्म तो वे अहिंसक भी थे। हिंसा और अहिंसा यह दो शब्द आते हैं। हिंसा माना किसी का घात करना, अहिंसा माना घात न करना। घात करना भी दो प्रकार का होता है। काम–कटारी से मारना यह भी हिंसा करना है, दूसरा– किसी को क्रोध में मारना तो यह भी हिंसा है। इस कारण इस समय सभी पापात्मा हैं। कहते हैं न मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। तो नम्बरवार तो होते ही हैं; लेकिन हैं सब पापात्मा। तो जब बाप आते हैं तो बाप को पहचानना चाहिए। कहते हैं परमपिता, तो उसका कोई पिता नहीं, वह सबका पिता है। वह सबका टीचर भी है। परमात्मा जो परमधाम में रहते हैं उनका कोई बाप तो है नहीं। बाकी तो सबको बाप होते हैं। ब्र०वि०शं० का भी बाप है। कहते हैं न शिवाय नमः तो बाप हो गया न। बाप पुनर्जन्म में नहीं आते; परन्तु वो कल्प में एक बार जन्म लेते भी हैं। कहते हैं शिव जयन्ती तो जन्म हो गया न। शास्त्रवादी तो यह नहीं जानते कि निराकार शिव कैसे जन्म लेते हैं। कहते हैं शिवरात्रि। रात्रि कौन सी? ब्रह्मा की रात्रि के अन्त में आते हैं। रात्रि में मनुष्य अंधकार के कारण धक्के खाते हैं न। तो देखो, भक्तिमार्ग में भी कहते हैं न आज गंगा स्नान करो, आज चार धामों की यात्रा करो, यह करो आदि। तो धक्के खाने हो गए न। यह हो गई रात्रि। सतयुग–त्रेतायुग है दिन। सतयुग में सुख है तो परमात्मा को याद भी नहीं करते। कहते हैं न दुख में स्मरण सब करे, दुख(सुख) में करे न कोई। तो भक्त बाप को सिमरण करते हैं, साधू–संत भी साधना करते हैं, तो पतित ठहरे न। पतित भारत को ही कहेंगे, और खण्डों को नहीं; क्योंकि भारत ही पावन था। देवी–देवता धर्म था। पवित्र आत्मा रहती थी। बाकी सतयुग में और धर्म नहीं थे। बाकी धर्म की आत्माएँ सज़ा खाकर पवित्र बनती हैं तो परमधाम में रहती हैं, सतयुग में आती (न)हीं। सतयुग में सुख–सम्पत्ति भी थी। ऐसे नहीं कि सतयुग में आजकल की तरह है कि आज धन है, कल नहीं है। कर्मों अनु(सार) नहीं। सतयुग में तो है प्रालब्ध। तो वहाँ 21 जन्म लिए सम्पत्तिवान रहते हैं। जब तक कोई बाप को न जाने तब तक उल्लू के उल्लू ही हैं। भले यह भी कहते हैं कि पवित्रता अच्छी है; परन्तु पहले बाप को जानना है। यहाँ तुम्हारी है एक मत। घर में तो अनेक मत होती है। बाप गणेश को याद करेगा, तो बच्चा हुनमान को। तो अनेक मत हो गई न। तो यहाँ तो तुम एक शिवबाबा को याद करते हो तो एक मत हो गई न। एक बाप से ही बच्चे को वर्सा मिल सकता है। रचना से तो मिल न सके। ऐसे तो किसी को बाबा कह देते। गांधी को भी बापू जी कहते थे। वह सबका बाप नहीं था। यह तो सभी का बाप है न। बाप से तो वर्सा मिलता है न। बाप आय सभी जंज़ीरों से छुड़ाते हैं। यह भक्ति की भी जंज़ीरें हैं। यह सभी समझते थोड़े ही हैं कि हम पतित हैं और पतित–पावन एक

शिवबाबा है। तो तुम बच्चे अब सत बाबा के संग में। तुम एक सत्य परमात्मा को मानते हो। और सतसंगों में जाओ तो कोई मनाह नहीं करते। यहाँ तो सख्त मनाह की जाती है। जब तक बाप को न पहचाना है तब तक तुम यहाँ क्लास में बैठ न सको; क्योंकि यहाँ अव्यभिचारी याद चाहिए। और जगह तो व्यभिचारी (अनेकों की) याद होती है, यहाँ तो कहा जाता है जब तक अव्यभिचारी याद नहीं तब तक यहाँ बैठने के लायक नहीं। मा(या) ने नालायक बना दिया है। कहते हैं न मैं निर्गुण हारे माहें कोई गुण नाहीं... तो साधु–संत भी तो गाते हैं। तो किसी में गुण नहीं है गोया सब पतित हैं। पतित क्यों हैं? क्योंकि मुझे गाली देते हैं। जो परमात्मा को भी गाली देते उन जैसा पतित कौन होगा! कहते हैं न परमात्मा सर्वव्यापी हैं। कुत्ते–बिल्ले, सबमें हैं। कहते हैं कुत्ते का बच्चा, उल्लू का बच्चा, तो गाली हुई न। तो बाप कहते हैं जब मेरी भी ग्लानि करते हैं तब मैं आता हूँ। बाप समझाते हैं सभी भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। सतयुग में सभी श्रेष्टाचारी हैं। इस समय हैं भ्रष्टाचारी। अच्छा समझो, सन्यासी हैं तो फिर भी जन्म तो भ्रष्टाचार से लेते हैं न। तो भ्रष्टाचारी होने कारण मुझे भी गाली देते हैं। ब्र०वि०शं० और ल०ना० सबको भ्रष्टाचारी समझते हैं; क्योंकि खुद भ्रष्टाचारी हैं। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि दिखाई पड़ती है। अगर यहाँ कोई बैठा हो और औरों को याद किया तो व्यभिचारी याद हो गई। भले ही याद पूरी रीति ठहरती नहीं; क्योंकि माया बुद्धियोग तोड़ देती है। फिर भी बुद्धियोग लगाना सिखलाया जाता है। अन्त में तुम्हारी याद ठहर जाएगी। तभी अन्त लिए गायन है अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। यह संस्था इसलिए जल्दी वृद्धि को नहीं पाती; क्योंकि यहाँ के कायदे कड़े हैं। जब तक बाप को न जाने तब तक क्लास में बैठ न सके; क्योंकि यहाँ अव्यभिचारी याद चाहिए। और कोई भी सचखण्ड का मालिक बना न सके। तुम अभी सचखण्ड के मालिक बाप द्वारा बनते हो। अभी तो झूठ खण्ड है। कहते हैं न झूठी माया, झूठी काया... तो परमात्मा को भी गाली देते रहते। छोटे–2 बच्चों को भी गाली देने सीखा देते कि परमात्मा सर्वव्यापी है। बाप कहते हैं कि गुरु–गोसाईं आदि सबको भूलो, मुझे याद करो। वास्तव में दुर्गति वाले को गुरु कहा ही नहीं जा सकता; परन्तु भक्तिमार्ग में दुर्गति वाले को गुरु कहा ही नहीं जा सकता। तो यह गुरु–गोसाईं, मात–पिता सब दुख देते हैं। देखो, बच्चे पैदा करते हैं वो भी सुख के लिए; परन्तु उनको भी पतित बना देते। आधा कल्प ऐसा चलता ही है। उनका कोई दोष नहीं। बाकी जब मैं आता हूँ, तो कहता हूँ, पवित्र बनो, तो बनना चाहिए न। समझो, बाप ज्ञान में आता है, पवित्र बनता है तो क्रियेशन को भी पावन बनाना पड़े। स्त्री, बच्चे पुरुष की क्रियेशन ठहरी न। आगे बाप पतित था तो बच्चे को भी पतित बनाते थे; परन्तु अब बाप पवित्र बने तो बच्चों को भी बनाना पड़े। अगर बच्चे पवित्र न बने तो वह पूत नहीं, कपूत है। घर में अगर एक पवित्र बने, एक न बने तो झगड़ा हो पड़ता। इसलिए मनुष्यों के हृदय विदीर्ण होते हैं। यहाँ सुनते हैं तो अच्छा–2 कहते हैं; परन्तु बाहर (जा)ते तो फिर कहते सन्यासी भी गृहस्थ में रह पवित्र न रह सके तो हम कैसे रह सकते, यह कैसे हो सकता; परन्तु यहाँ तो प्रतिज्ञा करनी पड़ती है। बच्चे भी कहते हैं क्यों नहीं पवित्र बनेंगे! आधा कल्प तो हमने पुकारा है कि सद्गति दाता आओ। अब आप आए हैं तो आपकी न मानेंगे तो किसकी मानेंगे। बाप भी कहते हैं पवित्र न बनेंगे तो स्वर्ग में जा न सकेंगे। अगर बाप पवित्र बने, बच्चे न बने तो कपूत ठहरे न। फिर इकट्ठा रहना मुश्किल हो पड़ता। हंस और बगुले हो गए। तो इकट्ठे कैसे रह सके। कई तो स्त्री बनती, पति न बनता। तो स्त्री पुकारती है कि यह दुशासन नगन करते हैं। कहते हैं, हम घर से निकाल देंगे। बाप कहते हैं– बच्ची, तुम्हें सहन करना पड़ेगा। अच्छा जाय काम करो, बर्तन माँजो, रोटी–टुक्कड़ तो चाहिए न। विकार में जाने से बर्तन माँजना अच्छा है। बच्ची को लौकिक बाप भी कहीं एसलम नहीं देते। वह भी कहेंगे, हमने तो तुम्हारा हथियाला ही इसलिए बाँधा है। तो विकार में जाना पड़े; परन्तु पारलौकिक बाप कहते हैं पवित्र बनो तो गोरे बनोगे। बाप कहते हैं कि दो दान तो छूटे ग्रहण। 5 विकारों का दान दो तो ग्रहण उतरे और तुम गोरे चंद्रमा समान 16 कला सम्पूर्ण बन जाएँगे। श्री कृष्ण

16 कला सम्पूर्ण है न। अभी नो कला, अभी सब पतित हैं, फिर कहो नर्कवासी हो तो बिगड़ पड़ते। यथा राजा–रानी तथा प्रजा भ्रष्टाचारी हैं। सतयुग है श्रेष्टाचारी। सतयुग में कोई रोते नहीं हैं। तुम रोते हो गोया अवस्था के कच्ची हैं। तो यहाँ भी तुमको रोने का हुकुम नहीं है। जब बाप मिला, जो 21 जन्म की बादशाही देता है तो रोने की क्या दरकार है; परन्तु यह भूल जाते तो रोते हो। यह रोगी दुनिया है, भोगी दुनिया है। सतुयग निरोगी योगी दुनिया है। यहाँ बाप को याद करना है। जब याद नहीं करते तो डिससर्विस करते हैं; क्योंकि वायुमण्डल खराब करेंगे। सब हैं ही पतित तो पतित को दान करने से पावन बन न सके। पतित को दिया तो वह काम भी पतित करेंगे। यह पतितों का पतितों साथ व्यवहार है। वहाँ पावनों का पावन साथ व्यवहार होगा। व्यभिचारी अक्षर तो बुरा है न। पहले भक्ति शुरू में अव्यभिचारी थी। शिव की पूजा करते थे। पीछे देवताओं की भक्ति की, जिसको रजोगुणी भक्ति कहा जाता। अभी तो मनुष्यों की पूजा करने लग पड़े हैं। सन्यासियों के चरण धो पीते हैं। मनुष्यों की पूजा को भूत पूजा कहा जाता है अर्थात 5 तत्वों के बने शरीर की पूजा। समझते कुछ भी नहीं, तभी कहा जाता है अंधे की औलाद अंधे। तुम हो सज्जे की औलाद सज्जे। तो वह अंधेरे में धक्के खा रहे हैं। कहते हैं गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु शंकर। इनको गुरु कहना यह भी राँग है। शंकर तो है सूक्ष्मवतन वासी और विष्णु है सतयुग के रहने वाला। वह भी प्रालब्ध भोगता है। बाकी है ब्रह्मा गुरु। यह भी जब तक इस तन में बाप न आए तब तक यह भी किस काम का। बेहद के बाप कहते हैं जो मेरी मत पर चलेंगे वही मेरा सपूत बच्चा है। जैसे उस गवर्मेन्ट के आर्डीनेन्स निकलते हैं न। यह भी पाण्डव गवर्मेन्ट का आर्डीनेन्स निकलते हैं कि पवित्र बनेंगे तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। तो कहते देह सहित देह के सर्व संबंधों को भूल माम् एकम् याद करो। तो बाप आय देह से बुद्धियोग तुड़ाते हैं और आत्मा की परमात्मा से सगाई कराते हैं। तो बाप को याद करना चाहिए और देह से भी ममत्व निकालना है। मोहजीत राजा की कहानी है न। तो तुमको भी मोहजीत बनना है। यह है युद्ध का मैदान। अगर इस मैदान में ज़रा भी गफलत की तो माया हप कर लेती है। कहते हैं गज को ग्राह ने पकड़ा। कोई ऐसी बात नहीं कि गज अर्थात हाथी कोई पानी में गया, ग्राह (ने) पकड़ लिया। नहीं। यह बात भी यहाँ की है। अच्छे–2 जो महारथी हैं, बहुतों को समझाते भी हैं, अगर उन्होंने भी थोड़ी गफलत की तो माया हप कर लेती है, जो बॉक्सिंग से ही भाग जाते हैं, पुरानी दुनिया में चले जाते। कड़ी संभाल रखनी पड़ती है; क्योंकि माया से बॉक्सिंग है। यह समझने की बातें हैं, सिर्फ सत्–सत् कहने की बात नहीं। सत्–2 तो भक्तिमार्ग में करते हैं कि नासिक .... नाक से पैदा हुआ यह भी सत्, हनुमान पवन से पैदा हुआ यह भी सत। यह है भक्तिमार्ग की बातें। यहाँ तो हैं धारणा की बातें। माया से युद्ध करनी है। अगर बाप का बनकर कोई पाप किया तो और ही सौणा दण्ड पड़ेगा। इसलिए बाप बहुत खबरदार करते हैं। अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बाप–दादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ